

मन्त्र (von मन्) m. gaṇa वृषादि zu P. 6,1,203. Siddh. K. 250, b, ult. neutr. MBh. 3, 10409; dagegen ist 13, 7082 mit der ed. Bomb. इमं (st. इदं) मन्त्रं zu lesen und Kām. Nitīs. 5, 48 mit der v. l. मर्माणि st. मन्त्राणि. Am Ende eines adj. comp. f. स्त्री. 1) Spruch, Gedicht, Lied als Erzeugnis des Geistes: कीरेश्चिन्मन्त्रं मनसा वनोषि तम् RV. 1, 31, 13. मन्त्रं वदत्युक्थ्यम् 40, 5. कृदा पतन्मन्त्रो घृणन् 67, 4. 74, 1. 152, 2. 2, 35, 2. 6, 50, 14. 7, 7, 6. 32, 13. 10, 14, 4. 50, 4. 6. 88, 14. 115, 7. AV. 15, 2, 1. 19, 54, 3. TS. 1, 5, 4, 1. 5, 1. — 2) übliche Bez. der vedischen Lieder und Sprüche Śāṅ. RV. Comm. I, S. 22. = वेदभेद, वेदविशेष, वेदंश AK. 3, 4, 25, 169. H. an. 2, 445. MED. r. 75. = ऋगादिगुह्योक्ति Vāṛ. beim Schol. zu Kir. 4, 32. Ait. Br. 5, 14, 23. 6, 1. Çat. Br. 1, 4, 4, 6. 14, 2, 4. 6. Çāṅk. Br. 26, 3. 5. Nir. 7, 1. °दृष्टि 3. 4. धाम्नायः पुनर्मन्त्राश्च ब्राह्मणानि च Kauç. 1. मन्त्रोक्त 8. 19. 23. °वर्ण Kāṭj. Çr. 1, 4, 12. 6, 3, 23. °वचन 1, 7, 9. मन्त्रेण, तूष्णीम् Āçv. Gṛh. 1, 3, 3. 21, 1. मन्त्रविदो मन्त्रो जपेयुः 2, 3, 10. मन्त्रः स्त्रो-कश्च RV. Prāt. 16, 5. M. 2, 16. 3, 137. 5, 36. 86. 8, 226. 9, 18. 65. 10, 127. 11, 226. 256. MBh. 3, 11101. Bhāg. 9, 16. °काविद् R. 1, 60, 9. Suçr. 1, 111, 11. Vikr. 87, 10. BRAHMA-P. in LA. (II) 52, 19. मन्त्रे P. 2, 4, 80. 3, 2, 71. 3, 96. 6, 3, 131. मन्त्रेषु 4, 141. होममन्त्रेषु M. 2, 105. बलिमन्त्रैः Jāṇ. 1, 285. वेद° Pāṇāt. 189, 24. मन्त्रवेदशास्त्रपठेषु Lalit. ed. Calc. 43, 20. 313, 6. गीर्भिः परममन्त्राभिस्तुष्टुश्च गदाधरम् HARIV. 2500. — 3) magische Besprechung, Zauberspruch; = देवादिसाधन H. an. MED. = तन्त्र Halāṅ. 5, 84. मन्त्रो गुरुः पुनरस्तु सो ऋस्मै RV. 1, 147, 4. मन्त्रैर्विषापकैः M. 7, 217. KATHAS. 49, 42. रसमन्त्रविशारद् Suçr. 1, 122, 12. 158, 19. Āçv. Çr. 4, 13. RAGH. 1, 61. मन्त्रं प्रयोगसंहारविभक्तमन्त्रम् 5, 57. मन्त्र° 59. °प्रयुक्त (मन्त्र) 12, 99. शितितन्त्रमन्त्रा KATHAS. 37, 120. WEBER, RĀMAT. UP. 282 u. s. w. °यक्षणा-त्रेण Pāṇāt. 1, 2, 17. 20. 9, 22. मन्त्रोषधरुद्रवीर्य RAGH. 2, 32. KATHAS. 9, 77. मणिमन्त्रोषधैः LA. (II) 91, 6. Spr. 584. 2119. षटन्त्र 3063. WEBER, RĀMAT. UP. 289. मन्त्रतन्त्रं वशीकरणम् Spr. 3196. Vet. in LA. (II) 14, 14. Çuk. ebend. 33, 13. Verz. d. Oxf. H. 93, a, 40. 94, a, 1. 21. 98, b, 14. 100, a, 35. 101, a, 30. 103, a, 7. BURN. Intr. 121. fg. 540. Lot. de la b. l. 238. fgg. वशीकरण° P. 4, 4, 96. Sch. सा देवकलशेनाथ दत्तमन्त्रा RĀGA-TAR. 6, 330. — 4) Verabredung, Berathung, Entschliessung; Rath, geheimer Plan; = गुप्तिवाद, गुप्तवाद, गुह्यवाद, रहस्यलोचन AK. H. 741. H. an. MED. स्वै-र्मन्त्रैर्नुतुपाः nach eigenem Rath auch ausser der Zeit (kommt er) zum Trinken RV. 3, 33, 8. न नो मन्त्रा अमुदितास एते 10, 93, 1. समानो मन्त्रः समितिः समानी 191, 3. शक्त्यपस्तिन्नः प्रभावात्साकृमन्त्रज्ञाः AK. 2, 8, 4, 19. H. 733. (ब्राह्मणेन) मन्त्रपेत्परमं मन्त्रं राजा षाडुण्यसंयुतम् M. 7, 58. MBh. 1, 5569. 2, 163. 5, 7464. R. 5, 81, 18. Spr. 4853. पापान्मन्त्रान्कुर्वो मन्त्र-यन्ति MBh. 2, 2396. मन्त्रैर्मन्त्रयन्तः Bhāg. P. 8, 5, 17. आत्मनाद्वितीयेन मन्त्रः कार्यो मन्त्रोभूता Spr. 3062. मन्त्रं सुरक्षितं कुर्यात् Jāṇ. 1, 343. एवं मन्त्रं वि-दधुर्मिथः KATHAS. 24, 84. निश्चित्य मन्त्रिर्मन्त्रनिश्चयम् R. 1, 8, 22. तैर्मन्त्रिर्मन्त्रक्षिते निविष्टैः 7, 18. मन्त्रः पुरचैः सार्धं यो न मन्त्रं समाचरोत् Spr. 113. 2120. यस्य मन्त्रं न ज्ञानति समागम्य पृथग्जनाः M. 7, 148. °काले 149. मन्त्रे (so die ed. Bomb.) सुव्याकृतानि च MBh. 5, 5831. उत्तम, मध्यम, अधम R. 5, 77, 13. fgg. किं मन्त्रेणा विना राज्यम् KATHAS. 33, 181. °संवरणा R. 1, 7, 9. R. GORR. 2, 72, 11. संवत° RAGH. 1, 20. °गुप्ति Kām. Nitīs. 4, 31 (Spr. 3321). भिन्दत्यवमता मन्त्रं तैर्यग्योनास्तथैव च M. 7, 150. तथा मन्त्रो न भिद्यते Spr. 3871. भिन्न° R. 4, 55, 9. षट्कर्ण, चतुष्कर्ण, द्विकर्ण Spr. 3061.

V. Theil.

3062. पञ्चविध Pāṇāt. 92, 3. पञ्चाङ्ग Kām. Nitīs. 11, 56. द्वादशेति मनुः प्राक् षोडशेति बृहस्पतिः । उशना विंशतिरिति मन्त्रिणा मन्त्रमण्डलम् ॥ 67. स च तान्मन्त्रमब्रवीत् MBh. 4, 88. स्त्री° geheimer Plan N. 21, 19. Spr. 379. 4691. तस्मान्नाशय पुत्र्येनमिति मन्त्रे मयोदिते KATHAS. 4, 120. तन्म-दीयो मन्त्रः कर्तव्यः du musst meinen Rath befolgen Pāṇāt. 81, 19. भद्रो ऽयं त्वया दृष्टो मन्त्रः du hast einen guten Plan ausgedacht 146, 17. Hit. 54, 14. — Vgl. मन्, धाकृष्टि°, ऋधश्च, कु°, चतुर्मन्त्र, उर्मन्त्र, निर्मन्त्र. प्रतिमन्त्रम्, बीजमन्त्र, बुद्ध°, बृहन्मन्त्र, मन्त्रा°, मोक्°, विष°, सत्य°, मातृ, मातृक.

मन्त्रकरण (म° + 2. क°) n. das Hersagen eines heiligen Spruches P. 1, 3, 25. Vor. 23, 10. Sch. die vedischen Sprüche: सप्राम्यारण्यकं तत्स्या-त्समन्त्रकरणं तथा Verz. d. Oxf. H. 56, a, 12.

मन्त्रकार (म° + 1. कार) m. Liederdichter P. 3, 2, 23.

मन्त्रकुशल (म° + कु°) adj. rathserfahren HARIV. 3850 (wo mit der neueren Ausg. मन्त्राय मन्त्रकुशलाः zu lesen ist). R. 2, 59, 20. Spr. 2117.

मन्त्रकृत् (म° + कृत्) P. 3, 2, 89. nom. ag. 1) Liederdichter RV. 9, 114, 2. Ait. Br. 6, 1. Kāṭj. Çr. 3, 2, 8. Pāṇāt. Br. 13, 3, 24. ऋषयः Āçv. Çr. 8, 14. TAITT. Ār. 4, 1, 1. HARIV. 459. — 2) einen heiligen Spruch hersagend Bhāg. P. 5, 23, 8. — 3) Rathgeber RAGH. 1, 61. 5, 4. 13, 31. — 4) ein Abgesandter (= दैत्यकर्तृ Schol.) Bhāg. P. 3, 1, 2.

मन्त्रकोष (म° + कोष) m. Spruchschatz, Titel eines Buchs Verz. d. Oxf. H. 101, b, 41. 104, a, 12.

मन्त्रगण्डक (म° + ग°) m. = विद्या Wissenschaft Hār. 196; vgl. गण्डक 1, e.

मन्त्रगुप्त (म° + गुप्त) m. N. pr. eines Mannes KATHAS. 69, 47. Daçak. 167. fgg.

मन्त्रगूढ (म° + गूढ) m. Späher ÇANDAR. im ÇKDR.

मन्त्रगृह (म° + गृह) n. Berathungsgemach MBh. 15, 191. 193.

मन्त्रचूडामणि (म° + चू°) m. Titel eines Buchs Verz. d. Oxf. H. 95, b, 1.

मन्त्रजल (म° + जल) n. durch Besprechung geheiligtes Wasser Bhāg. P. 9, 6, 27. — Vgl. मन्त्रतोय, मन्त्रोदक.

मन्त्रजिह्व (म° + जिह्वा) m. Feuer H. 1099. Vāṛ. beim Schol. zu Çiç. 2, 107. अमृतं नाम वत्सतो मन्त्रजिह्वेषु जुह्वति Çiç. 2, 107.

मन्त्रज्ञ (म° + ज्ञ) 1) adj. a) die heiligen Sprüche kennend Vāṇ. Brh. S. 13, 1. Bhāg. P. 9, 4, 12. मन्त्र° M. 3, 129. — b) rathserfahren M. 8, 1. R. 1, 7, 4. 6, 14, 2. — 2) m. Späher Halāṅ. 2, 270; vgl. मन्त्रविद्.

मन्त्रज्ञोतिस् (म° + ज्ञो°) f. Titel einer Schrift Ind. St. 3, 270.

मन्त्रण (von मन्त्रय्) n. das Berathen, Berathung MBh. 1, 202. 2, 38 und 4, 1 in den Unterschriften der Adhijāja. R. GORR. 1, 4, 13. 14. 104. 106. 2, 109, 65. MĀRK. P. 50, 87. मन्त्रणा f. dass. Pāṇāt. 1, 14, 96. 104. 107. 2, 1, 42. मन्त्रणार्क gaṇa उत्करादि zu P. 4, 2, 90. davon °र्कणि ebend.

मन्त्रतन्त्रनेत्र (म° - त° + नेत्र) n. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 341, b, N.

मन्त्रतन्त्रप्रकाश (म° - त° + प्र°) m. Titel einer Schrift Verz. d. Oxf. H. 104, a, 12.

मन्त्रतम् (von मन्त्र) adv. von Seiten der heiligen Sprüche: पानि (कुला-नि) कीनानि मन्त्रतः M. 3, 65. मन्त्रतस्तु समृद्धानि 66. den heiligen Sprü-chen gemäss: पशुं मो मन्त्रतः प्रोदय R. GORR. 1, 64, 22.